अभी न होगा मेरा अन्त  
अभी-अभी ही तो आया है  
मेरे वन में मृदुल वसन्त-  
अभी न होगा मेरा अन्त  
  
हरे-हरे ये पात,  
डालियाँ, कलियाँ कोमल गात!  
  
मैं ही अपना स्वप्न-मृदुल-कर  
फेरूँगा निद्रित कलियों पर  
जगा एक प्रत्यूष मनोहर  
  
पुष्प-पुष्प से तन्द्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,  
अपने नवजीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,  
  
द्वार दिखा दूँगा फिर उनको  
है मेरे वे जहाँ अनन्त-  
अभी न होगा मेरा अन्त।  
  
मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण,  
इसमें कहाँ मृत्यु?  
है जीवन ही जीवन  
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन  
स्वर्ण-किरण कल्लोलों पर बहता रे, बालक-मन,  
  
मेरे ही अविकसित राग से  
विकसित होगा बन्धु, दिगन्त;  
अभी न होगा मेरा अन्त।